

अनुक्रमणिका

1.	प्राकृत वाङ्मय में भाषावैज्ञानिक चिंतन की तात्त्विक मीमांसा वृषभ प्रसाद जैन, लखनऊ	1
2.	आचार्य कुन्दकुन्द कृत नियमपाहुड का दार्शनिक चिन्तन कमलेश कुमार जैन, वाराणसी	14
3.	गोम्मटसार के विशेष सन्दर्भ में जैन कर्म सिद्धान्त : एक तुलनात्मक विवेचन फूलचन्द जैन प्रेमी, दिल्ली	23
4.	शौरसेनी प्राकृत वाङ्मय में बौद्ध दार्शनिक अनुचिन्तन विजयकुमार जैन, लखनऊ	32
5.	प्राकृत अभिलेखों में वर्णित दार्शनिक बिन्दु सुदीप जैन, दिल्ली	39
6.	पवयणपाहुडे णाणचिंतणं श्रीयांश कुमार सिंघई, जयपुर	46
7.	प्राकृत वाङ्मय में निहित मूल्यों का लोक जीवन पर प्रभाव प्रेमचन्द्र रावका, जयपुर	56
8.	उत्तराध्ययनसूत्र-जीवविभक्ति का समीक्षण रामजी राय, आरा	62
9.	आचार्य गुणधर और उनका कषायपाहुड भागचन्द्र जैन भास्कर, नागपुर	67
10.	व्याख्याप्रज्ञप्ति में लोक का स्वरूप दामोदर शास्त्री, लाडनूँ	81
11.	भगवती आराधना – एक सांस्कृतिक निधि प्रेम सुमन जैन, उदयपुर	87
12.	प्राकृत वाङ्मय एवं जैनन्याय परम्परा कमलेश कुमार जैन, जयपुर	95
13.	आचार्य वट्टकेर के मूलाचार का दार्शनिक समीक्षण अशोक कुमार जैन, वाराणसी	101

14. आचार्य गुणधर कृत कषायपाहुड का मनोवैज्ञानिक अध्ययन वीरसागर जैन, दिल्ली	113
15. मुनिराज प्रभाचन्द्र (पूर्वनाम – सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य-प्रथम) की कान्तार-चर्या राजाराम जैन, दिल्ली	117
16. आचार्य गुणधर के कसायपाहुडसुत्त का दार्शनिक चिन्तन अनिल कुमार जैन, जयपुर	122
17. पंचास्तिकाय का दार्शनिक क्षेत्र में योगदान मंजू जैन, जयपुर	130
18. Philosophical Significance of Siddhasena Divakara's Sammai-Suttam Kokila H. Shah, Mumbai	140
19. Philosophical views depicted in Suyagadao (Sutakritanga Sutra) Varsha Shah, Mumbai	149
20. प्राकृत काव्यों में निहित दार्शनिक तत्त्व सत्यनारायण भारद्वाज, लाडनूँ	157
21. प्राकृत-हिन्दी जैन गीति काव्य परम्परा पुष्पलता जैन, दिल्ली	163
22. प्राकृत भाषा का स्तोत्र साहित्य ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, वैशाली	173
23. पाइय-साहिच्चम्मि पायच्छित्तस्स अवधारणा पुलक गोयल, जयपुर	182
24. प्राकृत साहित्य में भारतीय दण्ड संहिता के बीज सतेन्द्रकुमार जैन, दिल्ली	190
25. आचार्य कुन्दकुन्द के लिंगपाहुड की वर्तमान में उपयोगिता कमल कुमार जैन, पूना	207
26. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में विवेचित चार्वाक दर्शन के सन्दर्भों की समीक्षा सुमत कुमार जैन, जयपुर	212
27. गोम्मटसार (जीवकाण्ड) में जीवसमास की प्ररूपणा राका जैन, लखनऊ	218
28. प्राकृतसाहित्ये ध्यानस्वरूपम् प्रमोद जैन, जयपुर	227
29. नयचक्रस्य दार्शनिक-समीक्षा वैद्यनाथ झा, जयपुर	232
30. प्रश्नव्याकरण में प्रतिपादित संवरद्वार का दार्शनिक चिन्तन सत्यमकुमारी, जयपुर	236

31.	आचार्य कुन्दकुन्द का दंसेणपाहुड जयकुमार उपाध्ये, दिल्ली	243
32.	अशोक शिलालेख में निहित दर्शन आनन्द कुमार जैन, जयपुर	248
33.	प्राकृत वाङ्मय में प्रतिपादित अलौकिक गणित की अवधारणा हेमन्त जैन, जयपुर	251
34.	प्राकृत साहित्य के सन्दर्भ में मदिरा व्यसन पी.सी. जैन, जयपुर	259
35.	प्राकृत साहित्य में राजुल आख्यान गजेन्द्र जैन, भरतपुर	265
36.	आरामशोभाकथा का साहित्यिक वैशिष्ट्य कल्पना जैन, दिल्ली	273
37.	अभिज्ञानशाकुन्तले प्राकृतभाषाया अपरिहार्यता हरीश चन्द्र तिवाड़ी, जयपुर	285
38.	आचार्य श्रुतमुनि का साहित्यिक अवदान धर्मेन्द्र जैन, जयपुर	289
39.	महिवालकहा का साहित्यिक वैशिष्ट्य जिनेन्द्र कुमार जैन, उदयपुर	294
40.	प्राकृत साहित्य का नीतिशास्त्र को अवदान सीमा जैन, उदयपुर	301
41.	प्राकृत सदृष्टकों का साहित्यिक चिन्तन रि. श, दिल्ली	304
42.	प्राकृत भाषा का मराठी भाषा साहित्य पर प्रभाव महावीर प्रभाचंद शास्त्री, सोलापुर	308
43.	Setubandham : Some Introductory Remarks Ajay Kumar Mishra, Delhi	315
44.	भारतीय साहित्य में मागधी प्राकृत का योगदान सुदर्शन मिश्र, जयपुर	320
45.	अपभ्रंश साहित्य का राजनीतिशास्त्र को अवदान सरोज जैन, उदयपुर	326
46.	प्राकृतपैंगलम् का साहित्यिक वैशिष्ट्य उमाकान्त चतुर्वेदी, जयपुर	333
47.	ध्वन्यालोक में प्रयुक्त प्राकृत उदाहरणों की समीक्षा रामकुमार शर्मा, जयपुर	339

48.	पंचास्तिकाय-संग्रह-परंपरायां शब्दस्यावधारणा योगी कमलचन्द्रनाथ, जयपुर	346
49.	प्राकृत कृति कार्तिकेयानुप्रेक्षा में शौरसेनी-प्राकृत दर्शना जैन, दिल्ली	353
50.	प्राकृत वाङ्मय में आचार्य हेमचन्द्र का साहित्यिक अवदान कुणाल एम. कपासी, पाटण	360
51.	ज्योतिष में प्राकृत का योगदान रामेश्वरदयाल शर्मा, जयपुर	365
52.	गोम्मटसार जीवकाण्ड के अनुसार षट्श्लेष्या चिन्तन अमित कुमार, वाराणसी	369
53.	प्राकृत साहित्य में शान्ति शिक्षा शीशराम, जयपुर	373
54.	आचार्य देवसेन के दर्शनसार की साम्प्रतिक उपयोगिता ज्योति बाबू जैन, जयपुर	377
55.	प्राकृतसाहित्ये स्याद्वादः प्रदीप कुमार साहु, जयपुर	380
56.	भारतीय वाङ्मय में प्राकृत पाण्डुलिपि-ग्रंथालयों की भूमिका श्यामसुन्दर पाण्डेय, जयपुर	383
57.	महाकवि भास के नाटकों में प्रयुक्त प्राकृतभाषा का साहित्यिक वैशिष्ट्य द्वारिका प्रसाद श्रीवास्तव, पटना	392
58.	प्राकृत वाङ्मय के अनुसार पर्याप्ति प्ररूपणा का औचित्य शीतल चन्द जैन, जयपुर	397
59.	List of Contributors	401
